समाचार पत्रों से चयित अंश
Newspapers Clippings

दैनिक सामयिक अभिज्ञता सेवा

A daily Current Awareness Service

Vol. 43 No. 254 5 December 2018

रक्षा विज्ञान पुस्तकालय
Defence Science Library
रक्षा वैज्ञानिक सूचना एवं प्रलेखन केन्द्र
Defence Scientific Information & Documentation Centre
मैटकॉफ हाऊस, दिल्ली - 110 054
Metcalfe House, Delhi - 110 054

दैनिक जागरण

Web, 05 Dec 2018

रक्षा संबंधों को आगे बढ़ाएंगे भारत-अमेरिका

वाशिंगटन। रक्षा मंत्री निर्मला सीतारमण ने अमेरिका के रक्षा मंत्री जिम मैटिस से मुलाकात की और इस दौरान भारत और अमेरिका रक्षा तथा सुरक्षा संबंध तेजी से आगे बढ़ाने के लिए सहमत हुए हैं। मुलाकात में मैटिस ने भारत को पूरे हिंद-प्रशांत क्षेत्र तथा विश्व भर में 'स्थायित्व प्रदान करने वाली ताकत' बताया।

अमेरिकी रक्षा मंत्री ने अपने भारतीय समकक्ष के साथ पेंटागन में इस साल चौथे दौर की बैठक में सीतारमण का स्वागत किया। भारतीय रक्षा मंत्री अमेरिका की पांच दिवसीय आधिकारिक यात्रा पर हैं। यहां से वह कैलिफोर्निया में रक्षा मंत्रालय के डिफेंस इनोवेशन यूनिट तथा हवाई में हिंद प्रशांत कमान मुख्यालय जाएंगी।

मैटिस ने विगत सोमवार को सीतारमण का पेंटागन में दोनों नेताओं के लिए हुई प्रतिनिधि स्तर की बैठक में स्वागत करते हुए कहा, 'अमेरिका और भारत ने प्रधानमंत्री (नरेंद्र मोदी) के शब्दों में, अतीत से चली आ रही हिचकिचाहटों को दूर किया, दोनों देशों ने मित्रता की विरासत को आगे बढ़ाते हुए यह स्पष्ट किया कि सामरिक स्वायत्तता और सामरिक साझेदारी के बीच, कहीं कोई विरोधाभास नहीं है।'

पहली बार वाशिंगटन डीसी पहुंची रक्षा मंत्री सीतारमण से मुलाकात के दौरान जिम मैटिस ने विश्वास जताया कि भारत और अमेरिका मिलकर रूस से एस-*400* वायु रक्षा प्रणाली खरीदने पर संभावित अमेरिकी प्रतिबंधों के मुद्दे को सुलझा लेंगे। उल्लेखनीय है कि विगत अक्टूबर में भारत ने रूस से *5000* अरब डॉलर की रक्षा प्रणाली का सौदा करके अमेरिकी प्रतिबंधों का खतरा मोल ले लिया है।

मैटिस ने कहा कि विश्व के दो सबसे बड़े लोकतांत्रिक देशों ने अपने बीच भिन्न संस्कृति तथा भिन्न इतिहास होने के बावजूद नियम आधारित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था के लिए सिद्धांतों, मूल्यों और सम्मान को साझा किया है। उन्होंने कहा कि अमेरिका-भारत संबंध विश्व के प्राचीनतम और विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के बीच स्वाभाविक साझेदारी है।

उन्होंने कहा, 'सितंबर में आपके देश की मेजबानी में नई दिल्ली में टू प्लस टू मंत्री स्तरीय वार्ता होने के बाद खास तौर पर अमेरिका भारत रक्षा सहयोग में हमने सार्थक प्रगति की है। क्षेत्र में और पूरी दुनिया में शांति और सुरक्षा को आगे बढ़ाने में और इसके लिए एक स्थिरताकारक ताकत के तौर पर भारत के नेतृत्व की अमेरिका सराहना करता है।'

अमेरिकी रक्षा मंत्री ने कहा, 'आज हम सितंबर में हुए कम्यूनिकेशंस कम्पैटिबिलिटी एंड सिक्योरिटी एग्रीमेंट (सीओएमसीएएसए) समझौते को लागू करने की दिशा में काम कर रहे हैं।' सितंबर में दोनों देशों ने सीओएमसीएएसए पर हस्ताक्षर किए थे जो भारत को आधुनिक सैन्य हार्डवेयर प्राप्त करने की अनुमति देता है।

सीतारमण ने टू प्लस टू बैठक को ऐतिहासिक बताते हुए कहा कि इससे दोनों देशों के बीच रणनीतिक विचार-विमर्श का आधार तैयार हुआ। नई अमेरिका राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति में भारत-अमेरिका रक्षा संबंधों को जो महत्व दिया गया उससे वह उत्साहित हैं। भारत अमेरिका को रक्षा के क्षेत्र में अहम साझेदार के रूप

में देखता है।' साथ ही उन्होंने कहा कि दोनों देशों की सेनाओं के बीच बेहतर सहयोग है, इसके अलावा रक्षा, वैज्ञानिक, सह-विनिर्माण और सह-विकास तथा औद्योगिक स्तर पर भी सहयोग का स्तर अच्छा है।

THE TIMES OF INDIA

Web, 05 Dec 2018

We will work everything out: Mattis on India's purchase of S-400 defence systems

Washington: Defence secretary James Mattis has expressed confidence that India and the US would be able to resolve all issues related to India's purchase of the S-400 air defence systems+ from Russia that could draw possible US sanctions.

India risked the threat of US sanctions when it agreed in October to a $5 billion deal to buy Russian missile systems.

India's purchase is subject to potential US sanctions under the Countering America's Adversaries Through Sanctions Act (CAATSA), which deals primarily with countries having "significant transactions" with Russia, North Korea or Iran. "We will work everything out. Trust me," Mattis told reporters on Monday as a journalist asked the visiting defence minister Nirmala Sitharaman about the missile deal and the possibility of US sanctions.

India needs a presidential waiver to get around the punitive CAATSA sanctions.

"We'll work all this forward. This is the normal collaboration and consultation that we have with each other," Mattis said in response to a similar question.

"India has been spent many, many years in its nonaligned status, and it has drawn a lot of weapons from Russia," Mattis told reporters at the Pentagon ahead of Sitharaman's arrival on Monday.

Russia's S-400 system, a mobile long-range surface-to-air missile system, made its debut on the world stage in 2007. The platform rivals Lockheed Martin's THAAD, or terminal high altitude area defense, system and Raytheon's Patriot system. S-400 is known as Russia's most advanced long-range surface-to-air missile defence system.

China was the first foreign buyer to seal a government-to-government deal with Russia in 2014 to procure the lethal missile system. Moscow has already started delivery of an undisclosed number of the S-400 missile systems to Beijing.

DNA
DAILY NEWS & ANALYSIS

Web, 05 Dec 2018

Nirmala Sitharaman & James Mattis meet, but no clarity on waiver

Even as India and the US on Tuesday agreed to accelerate their defence and security ties, there was still no clarity on the wavier under the Countering America's Adversaries Through Sanctions Act (CAATSA) that will insulate India's defence deal with Russians to procure S400 and the purchase of oil from Iran.

Defence Minister Nirmala Sitharaman on Tuesday held a meeting with her American counterpart James Mattis at Pentagon to strengthen bilateral defence cooperation, wherein the two leaders discussed the growing partnership in the defence sphere and also exchanged views on a broad range of bilateral and

international issues of mutual interest, said an official statement. "They reviewed ongoing initiatives to further strengthen bilateral defence cooperation as a key pillar of the strategic partnership between India and the US," it said. "Both sides agreed to further strengthen bilateral defence cooperation, building on the discussions and outcomes of the '2 + 2 Dialogue' held in September 2018," the statement added.

Mattis said the US-India relationship is a natural partnership between the world's oldest and the world's largest democracy."We have made meaningful progress in advancing US-India defence cooperation, most notably with your nation hosting September's inaugural '2+2' ministerial dialogue in New Delhi," he said.

The ministerial talks served as a tangible demonstration of "our shared vision for a safe, secure, prosperous and free Indo-Pacific, underpinned by respect for the sovereignty and the territorial integrity of all nations," Mattis said."Today, we build on that momentum as we work to implement our agreement from September, Communications Compatibility and Security Agreement (COMCASA)," he added. Exuding confidence, she said the relationship continued to be very strong.

दैनिक जागरण

Web, 05 Dec 2018

तीनों सेनाओं की प्रतिभाओं को शामिल कर बनेगा विशेष डिवीजन

नई दिल्ली, प्रेट्र : सरकार तीनों सेनाओं की बेहतरीन प्रतिभाओं को शामिल करते हुए एक विशेष ऑपरेशन डिवीजन स्थापित करने पर विचार कर रही है जिन्हें विशेष मिशनों और अभियानों में तैनात किया जा सकेगा। सैन्य सूत्रों ने यह जानकारी दी।

सैन्य सूत्रों ने बताया कि डीविजन के व्यापक ढांचे के बारे में मुख्य पक्षों के साथ चर्चा की जा रही है। सूत्रों ने बताया कि विशेष डिवीजन को विशिष्ट अभियानों की जिम्मेदारी सौंपी जा सकती है जो देश की सुरक्षा के लिए अहम हैं। इस डिवीजन में वायुसेना, नौसेना और थल सेना के विशेष बलों के कर्मियों को शामिल किए जाने की संभावना है।

सूत्रों ने कहा कि 2016 में सेना द्वारा जम्मू एवं कश्मीर में नियंत्रण रेखा के पार विभिन्न आतंकवादी ठिकानों को निशाना बनाकर किए गए सर्जिकल हमलों के बाद इस प्रकार के डिवीजन की स्थापना का विचार आया।

संयुक्त बेड़े की लड़ाई की तैयारियों का परीक्षण जल्द

तैयारी

- **नौसेना का वार्षिक संचालन तैयारी क्षमता परख अभ्यास जनवरी से**
- **वायुसेना सहित तटरक्षक व थल सेना भी बनेंगे अभ्यास का हिस्सा**

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : नौसेना, वायुसेना, थलसेना और भारतीय तट रक्षक के संयुक्त बेड़े की लड़ाई की तैयारियों का परीक्षण करने के लिए भारतीय नौसेना का वार्षिक युद्धाभ्यास 'ट्रोपेक्स' थिएटर रेडीनैस ऑपरेशनल एक्सरसाइज, जनवरी में शुरू होने जा रहा है। लगभग तीन महीने तक चलने वाले इस अभ्यास में नौसेना के पोत और विमान भाग लेंगे। इसके अलावा थलसेना और तट रक्षक भी देश के सबसे बड़े युद्धाभ्यास में शामिल होंगे।

'ट्रोपेक्स' अभ्यास मौजूदा सुरक्षा हालातों के मद्देनजर विशेष महत्व रखता है। इस अभ्यास का उद्देश्य तीनों सेनाओं के बीच तालमेल से संयुक्त रणनीति लागू करने का अभ्यास करना है। इस अभ्यास में नौसेना के सभी सक्रिय पोत, पनडुब्बियां और विमानों को शामिल किया जाएगा। भारतीय वायुसेना और थलसेना के विमान और टुकड़ियां भी इसमें शामिल हैं।

पिछले कुछ वर्षों के दौरान ट्रोपेक्स के स्तर और जटिलता में वृद्धि हुई है। यहां बता दें कि अभ्यास विभिन्न चरणों में बंदरगाह और समुद्र में आयोजित किया जाना है। जिसमें लड़ाकू अभियानों के विभिन्न पहलू शामिल हैं। इस अभ्यास में विमानवाहक पोत विक्रमादित्य, परमाणु पनडुब्बी चक्र, लैंडिंग प्लेटफार्म डॉक, जलाश्वा, विध्वंसक चेन्नई, लंबी दूरी की समुद्री टोही और पनडुब्बी रोधी युद्धक विमान पी-8 आई आदि के भाग लेने की संभावना है।

उल्लेखनीय है कि अपनी समुद्री सीमाओं को शांत व स्थिर रखने के इरादे से भारत, क्षेत्र की नौसेनाओं के बीच आपसी समझ बेहतर करने की लगातार कोशिश भी कर रहा है। फ्रांस के साथ वरुण अभ्यास, अमेरिका के साथ हवाई अभ्यास में रिमपैक, पोर्ट ब्लेयर के निकट सिंगापुर के साथ सिंबेक्स जैसे अभ्यास इसी का नतीजा है।

MAIL TODAY

Web, 05 Dec 2018

US to breed gentically modified life forms to hunt enemies

PIC FOR REPRESENTATION

THE Pentagon is developing a radical plan to breed gentically modified life forms to hunt for enemy subs. A newly revealed project hopes to create "living tripwires" that could give early warning to Navy commanders.

The Naval Research Laboratory, or NRL, would be able to tune the micro-organisms to hunt for a variety of giveaway signals, from diesel fuel to human DNA from stealth divers.

According to Defence One, coming into contact with the trigger material would cause a loss of electrons, which could be detectable to friendly sub drones.

"In an engineered context, we might take the ability of the microbes to give up electrons, then use [those electrons] to talk to something like an autonomous vehicle," NRL researcher Sarah Glaven had said at a November event put on by the Johns Hopkins University's Applied Physics Lab.

Glaven said she believes the research is about a year away from providing concrete evidence that she can engineer reactions in abundant marine life forms that could prove useful for the military.

US Military plans to create living tripwires

Researchers are targetting abundant sea organisms, like Marinobacter, for the project.

"Sub-hunting, in particular, is what we would like it to be applicable for," she said.

Several projects across the Army, Navy and Air Force, are part of the $45 million effort known as the "Applied Research for the Advancement of Science and Technology Priorities Program on Synthetic Biology for Military Environments" designed to genetically engineer creatures for warfare.

If researchers can perfect the technology, it could lead to everything from living camouflage that reacts to its surroundings to better avoid detection, to radical new drugs.

Last year a team of scientists from the US Army Research Laboratory and the Massachusetts Institute of Technology developed and demonstrated a pioneering synthetic biology tool to deliver DNA programming into a broad range of bacteria.

Daily Mail